



Model: Horoscope-Matching

Order No: 121051301

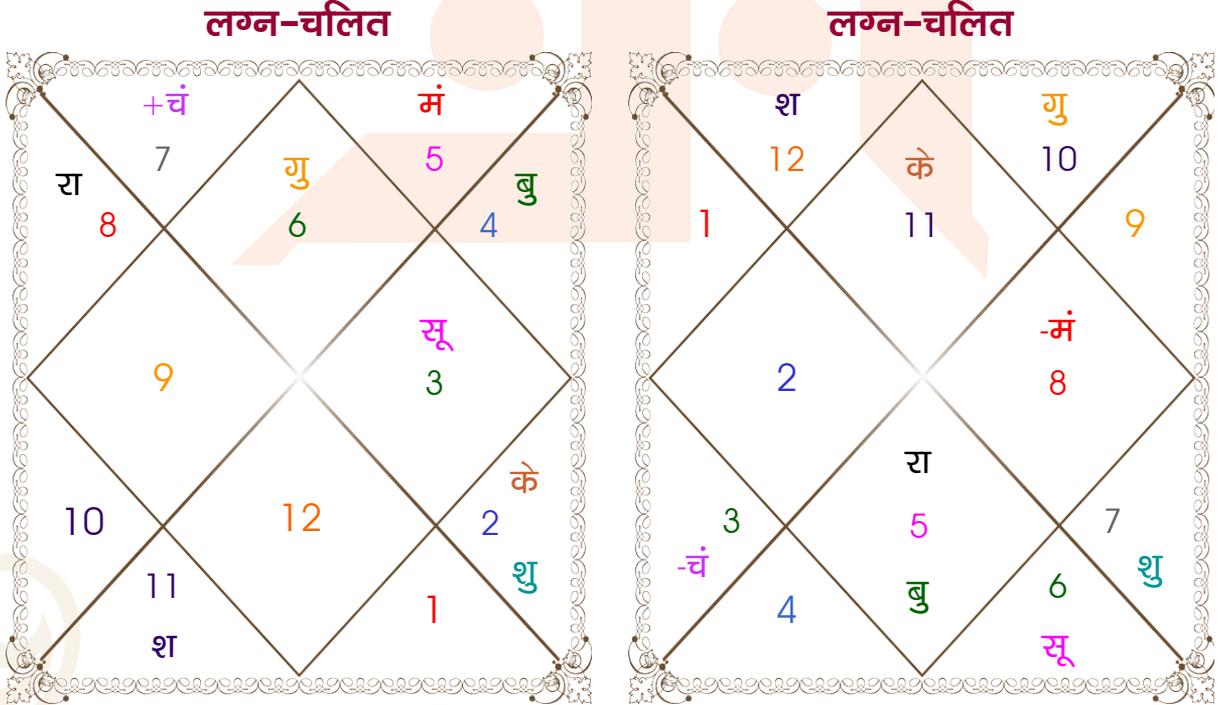
पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
30/06/1993 :	जन्म तिथि	: 23/09/1997
बुधवार :	दिन	: मंगलवार
घंटे 12:11:00 :	जन्म समय	: 17:01:00 घंटे
घटी 15:26:45 :	जन्म समय(घटी)	: 26:23:03 घटी
India :	देश	: India
Surat :	स्थान	: Raipur
21:10:00 उत्तर :	अक्षांश	: 21:16:00 उत्तर
72:50:00 पूर्व :	रेखांश	: 81:42:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे -00:38:40 :	स्थानिक संस्कार	: -00:03:12 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:00:17 :	सूर्योदय	: 05:52:18
19:24:10 :	सूर्यास्त	: 17:58:34
23:46:15 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:49:28
कन्या :	लग्न	: कुम्भ
बुध :	लग्न लग्नाधिपति	: शनि
तुला :	राशि	: मिथुन
शुक्र :	राशि-स्वामी	: बुध
विशाखा :	नक्षत्र	: मृगशिरा
गुरु :	नक्षत्र स्वामी	: मंगल
3 :	चरण	: 4
साध्य :	योग	: व्यतिपात
बव :	करण	: बालव
ते-तेजवन्त :	जन्म नामाक्षर	: की-कीर्ति
कर्क :	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	: तुला
शूद्र :	वर्ण	: शूद्र
मानव :	वश्य	: मानव
व्याघ्र :	योनि	: सर्प
राक्षस :	गण	: देव
अन्त्य :	नाड़ी	: मध्य
सर्प :	वर्ग	: मार्जार

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
गुरु 6वर्ष 0मा 3दि	07:33:55	कन्या	लग्न	कुंभ	18:59:45	मंगल 0वर्ष 6मा 17दि
बुध	14:43:20	मिथु	सूर्य	कन्या	06:38:54	गुरु
04/07/2018	28:19:31	तुला	चंद्र	मिथु	05:37:18	11/04/2016
04/07/2035	10:15:57	सिंह	मंगल	वृश्चि	02:23:40	11/04/2032
बुध 29/11/2020	04:24:51	कर्क	बुध	सिंह	21:01:35	गुरु 30/05/2018
केतु 27/11/2021	12:13:33	कन्या	गुरु व	मक	18:37:34	शनि 11/12/2020
शुक्र 27/09/2024	00:06:14	वृष	शुक्र	तुला	19:19:32	बुध 18/03/2023
सूर्य 03/08/2025	06:13:54	कुंभ व	शनि व	मीन	24:22:12	केतु 22/02/2024
चन्द्र 02/01/2027	18:16:54	वृश्चि	राहु व	सिंह	25:51:51	शुक्र 23/10/2026
मंगल 31/12/2027	18:16:54	वृष	केतु व	कुंभ	25:51:51	सूर्य 12/08/2027
राहु 19/07/2030	26:55:39	धनु व	हर्ष व	मक	11:05:34	चन्द्र 11/12/2028
गुरु 24/10/2032	26:18:45	धनु व	नेप व	मक	03:25:22	मंगल 16/11/2029
शनि 04/07/2035	29:14:59	तुला व	प्लूटो	वृश्चि	09:28:04	राहु 11/04/2032

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

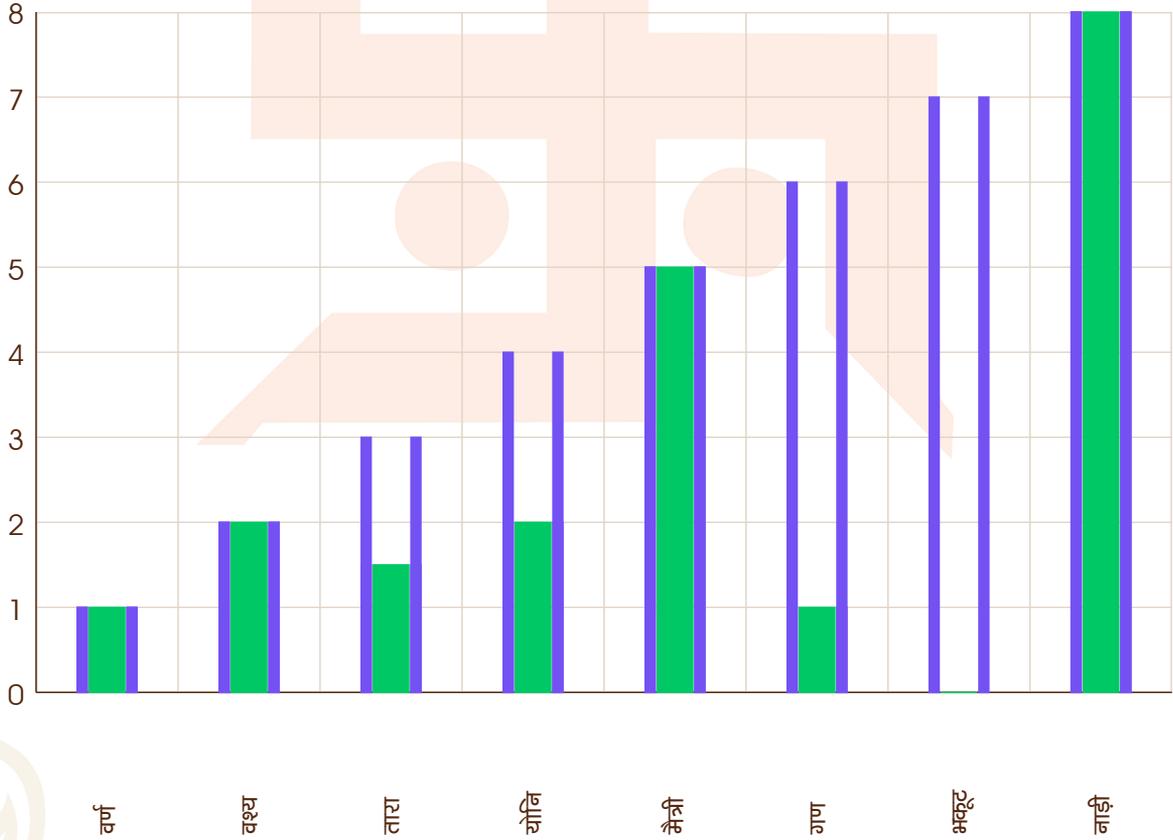
23:46:15 चित्रपक्षीय अयनांश 23:49:28



अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	सर्प	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	मिथुन	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाडी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	20.50		

कुल : 20.5 / 36



अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।
Mr. का वर्ग सर्प है तथा Ms. का वर्ग मार्जार है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।
अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr. और Ms. का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr. मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।
Ms. मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में दशम् भाव में स्थित है।
Mr. तथा Ms. में मंगलीक मिलान ठीक नहीं है।

निष्कर्ष

मंगलीक दोष के कारण मिलान ठीक नहीं है।



अष्टकूट फलादेश

वर्ण

Mr. का वर्ण शूद्र है तथा Ms. का वर्ण भी शूद्र है। इसमें दोनों का वर्ण समान है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। दोनों के स्वभाव, व्यवहार, दृष्टिकोण, पसन्द-नापसन्द में समानता रहेगी। साथ ही दोनों में इतना प्रेम होगा कि लगेगा कि दोनों एक-दूसरे के लिए ही बने हों। दोनों के बीच गहरा प्रेम, सद्भाव, साहचर्य एवं पारस्परिक समझ बनी रहेगी। दोनों घर की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को उन्नत एवं सुदृढ़ बनाने के लिए साथ मिलकर कार्य करते रहेंगे।

वश्य

Mr. का वश्य द्विपद अर्थात् मनुष्य है एवं Ms. का वश्य भी द्विपद अर्थात् मनुष्य है अर्थात् दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। Mr. एवं Ms. दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसन्द/नापसन्द तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

Mr. की तारा विपत तथा Ms. की तारा मित्र है। Mr. की तारा विपत होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। Mr. एवं Ms. के परिवार के लिए यह विवाह कष्टदायक हो सकता है तथा जिसके परिणामस्वरूप कष्ट, हानि एवं विपत्ति की संभावना बनी रहेगी। यद्यपि Ms. हमेशा अपने पति एवं परिवार के लिए सहयोगी एवं मददगार बनी रहेगी किंतु अपने पति के दुर्भाग्य का शिकार होकर Ms. को भी कष्ट झेलना पड़ सकता है। दुर्भाग्यवश बच्चे भी एवं विपन्नता का शिकार हो सकते हैं।

योनि

Mr. की योनि व्याघ्र है तथा Ms. की योनि सर्प है। अर्थात् दोनों की योनि समान नहीं हैं और इनके बीच उदासीनता का अर्थात् सम संबंध है। अतः यह मिलान औसत मिलान कहलायेगा। जिसके कारण दोनों के बीच आपसी समझबूझ का अभाव रहेगा तथा जीवन में सहयोग की भावना एवं प्रेम का अभाव भी बना रहेगा। दोनों के बीच अक्सर लड़ाई झगड़े होंगे तथा परिवार में तनाव तथा अशांति का भाव भी रह सकता है। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी बनी रहेगी। दोनों एक दूसरे को संदेह की भावना से देखेंगे जिससे दोनों के बीच कटुता का भाव भी पैदा होगा। दोनों के बीच आपसी समझ की कमी भी रहेगी अतः दोनों के बीच वैचारिक मतभेद भी हो सकते हैं। संभव है कि दोनों के बीच अवैध संबंध को लेकर संदेह की भावना बन जाये जिसके कारण पारिवारिक तनाव भी हो सकता है। बात-बात में दोनों के

बीच में कभी कभी तर्क-वितर्क की जगह कुतर्क भी हो सकता है। वर या कन्या में से कोई भी विश्वासघात भी कर सकता है। जिसके कारण दोनों के बीच लड़ाई झगड़ा भी हो सकता है। इनको अपने जीवन में अत्याधिक संघर्ष के उपरांत ही सफलता प्राप्त होगी अतः कठिन परिश्रम की आवश्यकता पड़ेगी। इसके बावजूद इनको अपने जीवन में सफलता कम ही मिलेगी। अर्थात् मेहनत अधिक और परिणाम कम ही मिलने की संभावना है। जिसके कारण दोनों को समय-समय पर मानसिक पीड़ा होती रहेगी। पारिवारिक आय औसत ही रहेगी। अर्थात् धनागम के स्रोत कम ही रहेंगे। पति-पत्नी के बीच विचारों में भिन्नता होगी एवं जीवन में उतार-चढ़ाव बने रहेंगे। दोनों लापरवाह प्रवृत्ति के होंगे किंतु परिवार के प्रति कर्तव्यनिष्ठ रहेंगे। दोनों के बीच रोमांस एवं सेक्स में रुचि की कमी भी रह सकती है। कई बार वाद-विवाद में तर्क-वितर्क होते रहेंगे। जिसके कारण समय-समय पर धन हानि भी हो सकती है। आपस में प्रेम एवं सौहार्द की भी कमी रहेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन बहुत अच्छा न रहकर निम्न सामान्य स्तर का ही होगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में Mr. एवं Ms. दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि Mr. एवं Ms. के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण Mr. एवं Ms. जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

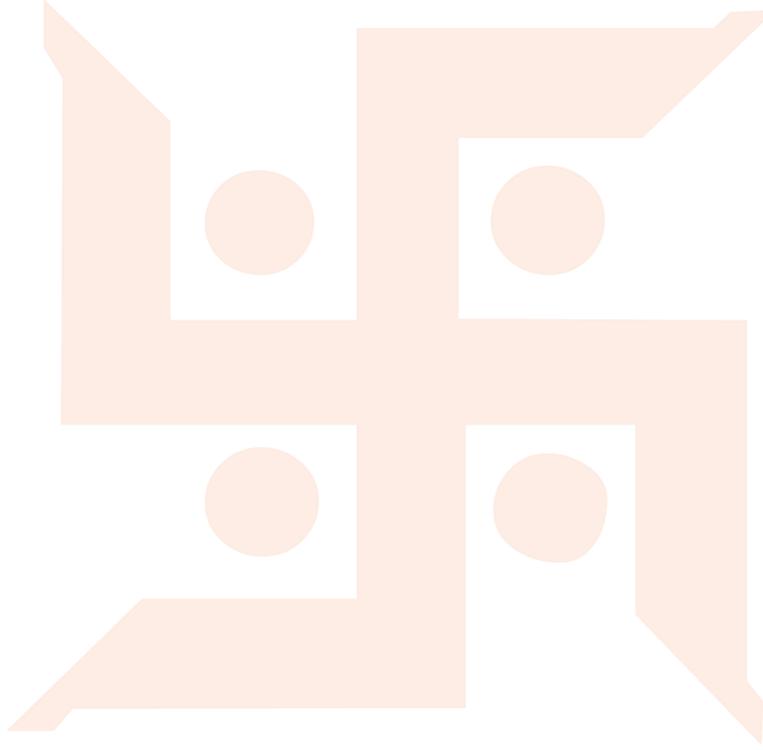
Mr. का गण राक्षस तथा Ms. का गण देव है। अर्थात् Ms. का गण Mr. के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण Mr. निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही Mr. का Ms. के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अशांति का माहौल बना रहेगा। Ms. हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

Mr. से Ms. की राशि नवम भाव में स्थित है तथा Ms. से Mr. की राशि पंचम भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें नवम-पंचम का वैधव्य दोष लग रहा है। जिसके कारण लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं अनहोनी घटनाएं घट सकती हैं। Mr. की प्रवृत्ति लॉटरी, सट्टेबाजी, जुआ आदि में धन बर्बाद करने की हो सकती है। अपनी इन बुरी आदतों के कारण पति-पत्नी के बीच कोई प्रेम शेष नहीं रह पाता। फिर भी यह विवाह स्वीकार्य है यदि दोनों के राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र हैं।

नाड़ी

Mr. की नाड़ी अन्त्य है तथा Ms. की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।



मेलापक फलित

स्वभाव

Mr. की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा Ms. की राशि वायुतत्व युक्त मिथुन है। अतः इसके प्रभाव से Mr. और Ms. के मध्य स्वभावगत समानताएं विद्यमान रहेंगी फलतः परस्पर संबंधों में मधुरता होगी एवं वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः यह मिलान उत्तम रहेगा।

Mr. की जन्म राशि का स्वामी शुक्र तथा Ms. की राशि का स्वामी बुध परस्पर मित्र राशियों में स्थित है सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए यह ग्रह स्थिति उत्तम मानी गई है। इसके प्रभाव से Mr. और Ms. का परस्पर स्नेह सहयोग एवं समर्पण का भाव रहेगा तथा सुख दुख में एक दूसरे को सहयोग प्रदान करने में तत्पर होंगे। वे एक सच्चे मित्र की तरह एक दूसरे के गुणों की प्रशंसा तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे इससे Mr. और Ms. का दाम्पत्य जीवन सुख एवं शांति पूर्वक व्यतीत होगा।

Mr. और Ms. की राशियां परस्पर नवम एवं पंचम भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ फलों में न्यूनता आएगी तथा यदा कदा परस्पर संबंधों में अनावश्यक वैमनस्य तथा विरोध का भाव भी परिलक्षित होगा। साथ ही परस्पर अहंकार की भावना की प्रबलता रहेगी जिससे सुखी वैवाहिक जीवन व्यतीत करने में परेशानी की अनुभूति करेंगे। यदि संयम एवं बुद्धिमता पूर्वक उपरोक्त भावों की उपेक्षा करें तो Mr. और Ms. का वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है।

Mr. और Ms. दोनों का वश्य मानव है। इसके प्रभाव से इनकी अभिरुचियों में समानता होगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर भी अनुकूलता रहेगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

Mr. और Ms. दोनों का वर्ण शूद्र है। अतः इनकी कार्य क्षमता में समानता रहेगी तथा अपने कार्यों को बिना किसी वरीयता के ईमानदारी एवं परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करने में समर्थ रहेंगे। फलतः Mr. और Ms. का कार्य क्षेत्र सुदृढ़ रहेगा।

धन

Mr. और Ms. की तारा सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष शुभ या अशुभ प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। इन पर भकूट का प्रभाव भी सम ही होगा लेकिन Mr. पर मंगल का अशुभ प्रभाव रहेगा जिसके प्रभाव से समय समय पर आर्थिक उतार चढ़ाव का सामना कर सकते हैं। साथ ही लाभ एवं आय स्रोतों में भी व्यवधान उत्पन्न होंगे।

इसके अतिरिक्त Mr. की प्रवृत्ति अनावश्यक रूप से व्यय करने की भी होगी जिसका आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। अतः उन्हें चाहिए कि अनावश्यक व्यय की

इस प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखें तभी उनकी आर्थिक स्थिति अनुकूल रह सकती है।

स्वास्थ्य

Mr. की नाड़ी अल्प तथा Ms. की नाड़ी मध्य है। अतः नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे तथा इसका इनके स्वास्थ्य पर कोई प्रभाव नहीं होगा परन्तु मंगल का Ms. के स्वास्थ्य पर विशेष अशुभ प्रभाव रहेगा। इससे वे रक्त या पित्त संबंधी परेशानियां प्राप्त करेंगी तथा गुप्त या धातु संबंधी रोगों का भी उन्हें सामना करना पड़ सकता है। साथ ही मासिक धर्म संबंधी अनियमिता से भी कष्ट की अनुभूति करेंगी। अतः इन प्रभावों में न्यूनता लाने के लिए Ms. को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से Mr. और Ms. का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त Mr. और Ms. के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में Ms. के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन Ms. को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में Ms. को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुंदर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से Mr. और Ms. सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार Mr. और Ms. का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

Ms. के अपनी सास से संबंधों में अनुकूलता तथा मधुरता रहेगी तथा उनकी तरफ से Ms. किसी भी अनावश्यक समस्या या असुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। Ms. के हृदय में उनके प्रति सेवा भाव रहेगा तथा अपनी सेवा के द्वारा उन्हें प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी। यद्यपि यदा कदा इनके मध्य मतभेद या विवाद भी होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए होगा तथा सामान्यतया संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

उनके ससुर से Ms. को विशेष स्नेह सम्मान तथा अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी तथा के द्वारा Ms. को समय समय पर समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा लेकिन देवर एवं ननदों से Ms. के अत्यंत ही स्नेह एवं सौहार्द पूर्ण संबंध रहेंगे तथा उनसे उन्हें पूर्ण

सम्मान तथा सहयोग मिलेगा। साथ ही परस्पर संबंधों में मित्रता का भाव रहेगा तथा आपसी समस्याओं तथा सुख दुख में एक दूसरे को अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इस प्रकार Ms. के सास ससुर का दृष्टिकोण सामान्यतया अनुकूल नहीं रहेगा।

ससुराल-श्री

Mr. के सास से सामान्यतया मधुर संबंध रहेंगे तथा उनके प्रति मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना विद्यमान रहेगी। साथ ही सास को अपनी माता के समान आदरणीया समझेंगे। वह सपत्नीक अवसरनुकूल ससुराल में उनसे मिलने भी जाया करेंगे तथा अपने मन में कभी श्रेष्ठता की भावना नहीं लाएंगे जिससे संबंध अनुकूल रहेंगे।

ससुर के साथ में Mr. के संबंध विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण उनके आपस में मतभेद होंगे लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य की प्रवृत्ति एवं बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबंधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबंधों में अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण सम्मान स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा मित्रता की भी भावना रहेगी जिससे एक दूसरे को समझने में सफल रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण Mr. के प्रति सकारात्मक रहेगा तथा Mr. भी मधुर संबंधों को बनाने में नित्य यत्नशील रहेंगे।